कोंकणी साहित्य

डॉ० रवींद्रनाथ मिश्र

किसी भी देश, राज्य और भूखंड के परिवेशगत जीवन, विचार–दर्शन, जीवन शैली, रहन–सहन, खान–पान आदि की झलक को हम वहाँ के साहित्य में देख सकते हैं। आज भूमंडलीकरण के दौर में एक–दूसरे के साहित्य, समाज और संस्कृति को जानने–पहचानने की प्रक्रिया कुछ अधिक ही बढ़ गई है। हम सभी जानते है कि साहित्य समसामयिक बदलाव की युगबोधीय धड़कन को परखते हुए चलता है। यही उसकी जीवंतता का बोधक है अन्यथा कुछ समय के बाद वह महत्वहीन हो जाता है। वस्तुतः कोंकणी साहित्य का वास्तविक विकास गोवा मुक्ति के बाद 1961 से शुरू हुआ। इस कारण कोंकणी साहित्य हिंदी एवं कतिपय अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की तुलना में साहित्य आंदोलनों, विचारों, वादों, विमर्शों, संघर्षों, आदि की दृष्टि से उतना समृद्ध नहीं है। यहाँ का साहित्य मूलतः ग्राम्य और नगर के सामाजिक–सांस्कृतिक बोधों, सामासिक संस्कृति, आंचलिकता, प्रकृति, प्रेम, आदि से जुड़ा हुआ है। मुक्ति के बाद कोंकणी साहित्य अपनी अस्मिता को लेकर भी संघर्ष कर रहा है। यहाँ भाषा और लिपि को लेकर भी विवाद बना हुआ है।

गोवा में धर्म–कर्म और कुछ भागों में बोलचाल की भाषा मुक्ति के पूर्व मराठी थी और आज भी है। इस कारण मराठी भाषी समाज अपनी भाषा को कोंकणी की तुलना में सर्वोपरि मानता है। कोंकणी भाषा को राजभाषा का

दर्जा दिलाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। अब कोंकणी को देवनागरी के साथ रोमन लिपि में भी मान्यता दिलाने की बात चल रही है। भाषा–विवाद के कारण ही कोंकणी को फलने–फूलने का स्वस्थ वातावरण नहीं मिल रहा है। यहाँ कोंकणी और मराठी की साहित्य अकादमियाँ अपनी–अपनी भाषा और साहित्य के संवर्धन में लगी हुई हैं। दोनों भाषाओं के साहित्यिक कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ पूरे वर्ष भर होती रहती हैं। इसके साथ कोंकणी और मराठी के युवा साहित्यिक महोत्सव, साहित्य सम्मेलन और नाट्य प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता है।

गोवा की नैसर्गिक सुषमा के कारण यहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में देशी एवं विदेशी सैलानी आते रहते हैं। विभिन्न धर्मों और जातियों के धार्मिक उत्सवों के कारण यहाँ सदैव उल्लास का वातावरण बना रहता है। गोवा का नाम लेने मात्र से पर्यटक उल्लसित हो उठते हैं। यहाँ कविता की पंक्तियाँ अपने–आप फूटती हैं। कथा रोज जन्म लेती है। दरअसल सूचना विस्फोट, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, आवागमन की सुविधा आदि के कारण यहाँ की मौलिकता क्षीण हुई है। राजनीतिक और सामाजिक जीवन का ताना–बाना भी बिगड़ा है। देश में सांप्रदायिक सद्भाव की अनूठी मिसाल रखने वाले गोवा की छवि मार्च 2006 के दक्षिण गोवा में हुए दंगे से धूमिल हुई है।

गोवा को गौओं का प्रदेश कहा जाता है। यह परशुराम की भूमि है। गोवा साहित्य, कला और संस्कृति का केंद्र है। यहाँ विगत तीन वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का आयोजन हो रहा है। अपनी तमाम खूबियों के साथ गोवा समृद्धि के पथ पर है। गोवा महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल राज्यों से कोंकणी भाषा के माध्यम से जुड़ा हुआ है। इसी कारण यहाँ कोंकणी भाषा साहित्य की कई लिपियाँ और बोलियाँ पाई जाती हैं। सांस्कृतिक रूप से यहाँ मराठी भाषा और साहित्य की जड़ें गहरी हैं। कोंकण की पट्टी से जुड़े कर्नाटक और केरल के भूभाग में कोंकणी का अलग–अलग रूप पाया जाता है। इन चार राज्यों में कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर साहित्य लिखा जा रहा है। मैं यहाँ मुख्य रूप से गोवा में लिखे जा रहे साहित्य का उल्लेख कर रहा हूँ।

काव्य लेखन

गोवा मुक्ति के बाद स्वर्गीय मनोहरराय सरदेसाय ने कोंकणी कविता को एक नई पहचान दी। उन्हें कोंकणी कविता का स्तंभ पुरुष कहा जाता है। 22 जून 2006 को उनके निधन से कोंकणी कविता के एक युग का अंत माना जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। गोवा कोंकणी अकादमी ने ***अठरा जून*** शीर्षक से उनकी 1945 से 2005 तक की महत्वपूर्ण कविताओं का संकलन प्रकाशित किया है जिसमें कुल 129 कविताएँ संकलित हैं। इनमें जहाँ एक तरफ राष्ट्रीय भावों का उन्माद है तो वहीं दूसरी तरफ प्रेम, प्रकृति, समाज, संस्कृति आदि की मधुरतम झलक विद्यमान है। पुस्तक के अंत में यहाँ के सुप्रसिद्ध कोंकणी कवि माधव बोरकार ने संकलन की कतिपय महत्वपूर्ण कविताओं के माध्यम से 24 पृष्ठों में 'मनोहररायय़ांली कविता' शीर्षक से समीक्षा प्रस्तुत की है।

कोंकणी एवं मराठी कविता के सशक्त हस्ताक्षर सु.म. तडकोड का एक ***कृष्ण–कली*** शीर्षक काव्य–संग्रह प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत संग्रह में विगत तीस वर्षों से सर्जित 52 कविताएँ संकलित हैं। ये मूलतः अशरीरी प्रेम पर आधारित प्रकृति एवं मिथकीय चेतना से अनुप्राणित हैं। ***नागडो बेताळो / तुका धताळो / पर्जळाची बात पेटोवन / काळखां बताळो /स्वासांत बेताळो/कसे रिगताळो/चंबरळेल्या शाश्वताचो सुर्या दिताळो***। अर्थात, नग्न बेताल भगवान तुझ पर आकर एवं ज्ञान ज्योति जलाकर अंधकार में लुप्त होते रहें। वही बेताल श्वासों में समाकर आशावादी शाश्वत सूर्य देते रहें।

मिलिंद हरिश्चंद्र काकोडकार के ***मंथन*** नामक प्रकाशित प्रथम काव्य–संग्रह में सामाजिक मूल्यहीनता, अवसरवादिता, नैतिक अधोपतन, आपसी क्षुद्र व्यवहार आदि का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। ***हाक्केसाची पांखां*** (तमन्ना के पंख) काव्यसंग्रह में आनंद फडते की कुल 52 कविताएँ संकलित हैं। फडते का मानना है कि सद्भाव, सद्गुण, सदविचार, सदबुद्धि, सद्मन आदि कविता की आनंदानुभूति के क्षण हैं। शरतचंद्र शेणै का ***आत्मायन*** और आंद्रे का ***दोंगरा देगेर बसलां*** नाम से दो काव्यसंग्रह और रोमन लिपि में Fr. Louis Alvares की Zielo नाम से एक कविता की पुस्तक प्रकाशित हुई।

कवयित्री ग्वादालूप डायस के ***मळबगंगा*** (आकाशगंगा) काव्यसंकलन में उनके रोजमर्रा जीवन के विभिन्न भागों को अभिव्यक्ति मिली है। इसमें कुल छोटी – बड़ी 64 कविताएँ संकलित हैं। ***म्हजी माती म्हजें मळब*** (मेरी मिट्टी मेरा आसमान) कवयित्री हर्षासद्गुरु शेटये की 51 कविताओं की पुस्तक है। जिसमें उन्होंने अपनी निजी अनुभूतियों की नारी व्यथा को जैसे उड़ेल दिया हो। यह आत्मनिष्ठ कविता का एक सुंदर उदाहरण है। मिनीन आल्मेदा ने अपने ***कवनजाळ*** काव्य संग्रह में 61 छोटी–छोटी कविताओं में सामाजिक जीवन, प्रकृति, प्रेम आदि के विविध रूपों को दर्शाया है। इन्होंने अपनी कविताओं में शब्द प्रयोक्ति व प्रश्नवाचक शैली का सुंदर प्रयोग किया है। ***भाकरी जाय? चाकरी जाय? बिजली जाय? उदक जाय? घर जाय? कितें जाय?***। अपने ***निर्मळ*** नामक काव्य–संकलन में उभरते हुए युवा कवि ॲलनिश ने छोटे–छोटे अनुभवों को 43 कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया है।

कोंकणी बाल–साहित्य रचनाकारों में भरत नायक का नाम विशिष्ट है। ***व्हडलो जातलों हांव*** (मैं बड़ा बनूँगा) इनका आठवाँ बालगीत काव्यसंग्रह है। इसमें बालजीवन से संबंधित कुल 50 गीत संकलित हैं। इसी प्रकार झिलू लक्ष्मण गांवकार के ***माणकुल्यांची गितां*** के लघु बालगीत संग्रह में मात्र 28 गीत संकलित हैं। ***लसूण कांद्या झगडें*** नागेश नायक बडिये की मात्र 16 बाल कविताओं का संग्रह है। डॉ. भिकाजी घाणेकर के ***देशगितां भक्तिगितां*** पुस्तक में *आमी सगळे एक, देसगीत, भारत देश एवं देवाक नमन, श्री सरस्वती, महालक्ष्मी* शीर्षक से कुल 30 गीत हैं।

कन्नड कवि डॉ. सुमतिंद्र नाडिग की सर्गबद्ध 26 लंबी कन्नड़ कविताओं का कोंकणी अनुवाद मनोहरराय सरदेसाय ने ***दांपत्य गीता*** शीर्षक से किया था, जिसका प्रकाशन कोंकणी अकादमी ने किया। नाडिग ने अपनी कविताओं में दांपत्य जीवन के विविध अनुभवों के साथ गोवा के परिवेशगत जीवन को भी उकेरा है। उन्होंने गोवा में एक लंबे अर्से तक यहाँ के विभिन्न महाविद्यालयों में अंग्रेजी प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। मूलतः पुर्तगाली भाषा में लिखी फेर्नांदा नायक की 48 कविताओं का कोंकणी अनुवाद गोवा के वरिष्ठ कवि एवं स्वतंत्रता सेनानी नागेश करमली ने ***म्हली भूंय*** (मेरी जमीन) नामक शीर्षक से किया है। अशोक चोडणकर ने अपने ***जिवीत फुलूंदी समेस्तांचें***

नामक काव्यसंकलन में रोमन लिपि में लिखी गई कविताओं का अनुवाद किया है। इसमें बाएं पृष्ठ पर रोमन लिपि में लिखी गई कविता का अनुवाद दाएं पृष्ठ पर कोंकणी भाषा में देवनागरी लिपि में किया गया है।

कथा साहित्य

आधुनिक कोंकणी कथा लेखन की शुरूआत मुख्यतः गोवा मुक्ति (1961) के बाद पुंडलीक नायक के ***अच्छेव*** (1977), दामोदर मावजो के ***कार्मेलीन*** (87) और महाबळेश्वर सैल के ***काळी गंगा*** (90) उपन्यास से मानी जाती है। इनके पूर्व की पीढ़ी में बालकृष्ण भगवंत बोरकार, लक्ष्मणराव सरदेसाय, पांडुरंग भांगी, सुमंत केळेकार, चंद्रकांत केणी, उदय भेंब्रे, यशवंत पलेकार, विष्णु नायक, सुरेश काकोडकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस वर्ष कुछ ही कोंकणी उपन्यास प्रकाशित हुए। उदय शेणवी के 112 पृष्ठों के ***दाव*** उपन्यास में प्रकृति और ग्राम्य जीवन की कहानी कही गई है। इनका एक और उपन्यास ***तागडेंची दाली*** शीर्षक से आया। नंदा बोरकर का ***समर्पण*** उपन्यास भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। इसी वर्ष ***काणी आज्याली*** (पितामह की कहानी) देविदास कदम, ***वर्स फुकट वचूंक ना*** (वर्ष निरर्थक नहीं गया), गजानन जोग, ***हरीश पिरीश आनी देंवचार*** (हरीश पिरीश और देंवचार) सतीश दळवी, ***रानाच्या मनांत*** (जंगल के मन में) माया अनिल खरंगटे नाम से चार बाल उपन्यासों का प्रकाशन एक साथ हुआ। विमल प्रभुदेसाय की लघु बाल पुस्तिका ***तिंगूल*** मात्र 23 पृष्ठों की है जिसमें दो सचित्र बाल कहानियाँ और एक बालगीत संग्रहीत है।

नाट्य साहित्य

गोवा को नाटक एवं रंगमंच की भूमि कहा जाता है। आज भी यहाँ वर्ष में एक बार जगह–जगह पर कोंकणी एवं मराठी नाट्य प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। लगभग प्रत्येक गाँव में नाट्य मंडलियों की स्थापना की गई है। गोवा कला अकादमी में नाट्य महाविद्यालय की स्थापना के कारण पूरे वर्ष भर नाट्योत्सव की धूम मची रहती है। इसके अतिरिक्त यहाँ तियात्र का भी अपना विशिष्ट महत्व है। गोवा में छोटे–बड़े देवालयों में साल में एक बार जात्राएँ निकाली जाती हैं।

अशोक कामत कोंकणी साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार हैं। नाटक, कहानी, कविता आदि विभिन्न विधाओं की इनकी कुल आठ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अशोक का एक ***सांज अमुरपिकी नाम*** से दो अंकों का लघु नाटक आया जिसका मंचन 1986–87 में कला अकादमी के खुले सभागार पणजी में किया गया था। युवा कवि, नाटककार, दिग्दर्शक, नट एवं मूलतः कोंकणी प्राध्यापक के रूप में राजय पवार को विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है। इस वर्ष ***आमचो हात जगन्नाथ*** (अपना हाथ जगन्नाथ) दो अंकों के इस लघु नाटक के प्रकाशन के साथ उनके ***जमलें रे जमलें*** और ***अंता अंता शिरीमंता*** नामक दो और नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। कवि, नाटककार एवं प्राध्यापक हनुमंत चोपड़ेकार का ***हम होंगे कामयाब***, रोहिदास बाबुराव शिरोडकार का ***केन्ना कशें*** (कभी कैसे), विजेश सांवंत का ***अदृष्ट***, सुनील नायक का ***भाटकारा विरुद्ध मंडकारा***, भरत नायक का ***ह य सा य बा***, महेश चंद्रकांत नाईक का ***ॲक्चुअली..... आय लवह यू*** नाम से दो–दो अंकों के छः लघु नाटक एवं महेश नायक का ***आत्मो*** नाम से एक नाटक प्रकाशित हुआ।

मूलतः कवि और अनुवादक एवं साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रमेश भगवंत वळुस्कार ने कवि के साथ–साथ नाटककार के रूप में भी अपनी एक अलग पहचान बनाई। उन्होंने धर्मवीर भारती के ***अंधायुग*** नाटक का कोंकणी अनुवाद ही नहीं अपितु उसके सफल मंचन में भी अपना योगदान दिया। बालकथा के माध्यम से कोंकणी कहानी विधा में भी इन्होंने दस्तक दी है। इस वर्ष इनका ***कुंडेकुस्कुर*** शीर्षक से 12 दृश्यों का काव्यनाटक प्रकाशित हुआ।

कोंकणी एकांकी एवं तियात्र

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रचार–प्रसार के कारण नाटक एवं एकांकी में कमी आई है। इसे हम अस्वीकार नहीं कर सकते। कोंकणी एकांकी रचनाओं में झिलू लक्ष्मण गांवकार का ***सैमभार*** चार छोटी–बड़ी एकांकियों का संग्रह है जिसमें *सैमभार, खेळ, नवीवाट,* और *हें दायज* नामक चार एकांकी संकलित हैं। ब्रॅन्डा मिनेझीस के ***नाटयांगण*** में *एक लग्नाकसतरा विघ्ना, आई बांदावयल्यान धांवली, हांथरुण पळोवन पांय सोडूंक जाय!, एलिसांव* और *आपालेंय थोडें चिंतचे पापया* नामक पाँच एकांकी संग्रहीत हैं।

निबंध लेखन

गोवा मुक्ति के बाद कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं के लेखन का भी उत्कृष्ट स्थान रहा है। गाँधीवादी एवं समाजवादी वयोवृद्ध विचारक रवींद्र केळेकर ने गोवा में वैचारिक, ललित एवं दार्शनिक निबंध लिखने की एक सुदृढ़ परंपरा कायम की। साहित्य अकादमी एवं गोवा के स्थानीय महनीय पुरस्कारों से पुरस्कृत रवींद्र केळेकर को वर्ष 2007 में साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया गया। यह कोंकणी लेखक के लिए बहुत बड़े गौरव की बात है। इस वर्ष प्रकाशित ***आशिकुशीक*** निबंध–संग्रह में इनके भाषा, संस्कृति, साहित्य, धर्म, दर्शन, शिक्षा, देश–भक्ति, आदि जैसे विविध विषयों पर छोटे–छोटे 65 निबंध हैं। ***कसलो धीर आनी आदार*** केळेकर के दूसरे संग्रह में 1971 में प्रकाशित ***वेले वयल्यो घुलो*** निबंध–संग्रह का दूसरा संस्करण इस वर्ष प्रकाशित हुआ। मूलतः कथा लेखक चंद्रकांत केणी का ***आपालिया*** (छुपाछुपी) नाम से एक निबंध–संकलन आया। अ.ना. म्हांबरो का ***कोंबो गेलो तारवार.....*** (मुर्गा गया जहाज पर) 18 ललित निबंधों का संग्रह है। इसमें राजनीति, धर्म, व्यक्ति, महाभारत, आदि विषयों पर विनोद एवं विचारपूर्ण मत व्यक्त किए गए हैं। डेनियल एफ. डिसूजा का ***कसलीच मालीस नासताना*** शीर्षक से निबंध–संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें छोटे–छोटे कुल 25 निबंध हैं।

गद्य लेखन की अन्य विधाएँ

कोंकणी गद्य साहित्य लेखन की आलोचना, जीवनी, यात्रा, संस्मरण, आत्मकथा, आदि अन्य विधाओं में भी साहित्य सर्जन हो रहा है। भारतीय भाषाओं के साहित्य की भांति कोंकणी में भी इन विधाओं में कम लिखा जा रहा है। समीक्षा की दृष्टि से किरण बुडकुळे का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिनकी समीक्षाएँ यहाँ की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इनके अतिरिक्त शीला कोळंबकार, अना म्हांबरो, सुशांत, जयमाला, दत्ताराम, राजय पवार, मुकेश थळी, सुधा, हर्षा आदि के वैचारिक और ललित निबंध ***जाग, जैत, बिंब, गुलाब, कुळागर, ऋतु, कोंकण टायम्स, शोध, उर्वा, बारदेस, चवथ*** आदि मासिक, त्रैमासिक एवं वार्षिक पत्रिकाओं में

प्रकाशित होते रहते हैं। इनके अतिरिक्त *जाग* के दिवाली अंक एवं दैनिक समाचारपत्र *सुनापरांत* में भी समीक्षाएँ छपती रहती हैं।

कोंकणी नाटक एवं एकांकी के जनक कहे जाने वाले आचार्य रामचंद्र शंकर नायक पर आधारित *नाटक आनी नाटककार* (आचार्य रामचंद्र शंकर नायक) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें उन्होंने उनका विस्तार से परिचय एवं कोंकणी नाटक एवं एकांकी के क्षेत्र में उनके योगदान की चर्चा करते हुए शंकर नायक जी के दो एकांकियों को भी प्रकाशित किया है। गोवा विश्वविद्यालय, कोंकणी विभाग के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. आलिविन्स गोमिस ने अपने लेखन से कोंकणी की विभिन्न विधाओं को समृद्ध किया है। वर्ष 2007 में प्रकाशित उनका रोमन लिपि में लिखा *भायली भोंवडी* नामक यात्रा साहित्य है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने उत्तर एवं दक्षिण मलेशिया, सिंगापुर, चीन, हांगकांग, थाईलैंड और जापान में की गई अपनी यात्राओं का वर्णन किया है। कोंकणी यात्रा साहित्य की यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

विगत कुछ वर्षों से कोंकणी साहित्य में नए–नए विषयों पर पुस्तकें लिखी जा रही हैं। पाव्लू मोरास ने 2005 में *जागरण* शीर्षक से कोंकणी पत्रिकाओं के इतिहास पर एक पुस्तक प्रकाशित की थी। उसी का दूसरा भाग (*कोंकणी चळवतेचो दुसरो ग्रंथ, कोंकणी पत्रिकोद्यमाचो पयलो वांटो) जागरण* 2007 में आया, जिसमें गोवा, महाराष्ट्र (कोंकण क्षेत्र), कर्नाटक (मंगलूर), केरल प्रदेश में प्रकाशित विभिन्न लिपियों में कोंकणी दैनिक समाचारपत्र, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, एवं वार्षिक आदि पत्र–पत्रिकाओं के स्वरूप, उद्भव एवं विकास तथा उनके महत्व पर व्यापक एवं गंभीर प्रकाश डाला गया है। संप्रति कोंकणी साहित्य में भी नए–नए विषयों पर पुस्तकें आ रही हैं। डॉ. आनंद हेळेकार की *आरोग्य धन संपदा* पुस्तक में भिन्न–भिन्न रोगों के उपचार हेतु विभिन्न औषधियों के नाम और उनके सेवन के उपाय बताए गए हैं। *युवांकूर*–2007 संपादक प्रो. भालचंद्र गांवकर की पुस्तक मूलतः गोवा कोंकणी अकादमी, रोजरी कला, वाणिज्य महाविद्यालय, नावेलीं आनी रोजरी उच्च माध्यमिक विद्यालय, नावेलीं में आयोजित 28–29 जनवरी 2006 को सातवें युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन के स्वरूप एवं उसमें पुरस्कृत युवाओं के साहित्य से संबंधित है।

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा से मात्र एक दैनिक ***सुनापरांत*** पणजी से संदेश प्रभुदेसाय के संपादकत्व में निकलता है। इसे हम गोवा प्रदेश का परिवेशगत दर्पण कह सकते हैं। ***जाग, जैत, बिंब, गुलाब, कुळागर, ऋतु, कोंकण टायम्स, शोध, उर्वा, बारदेस, चक्थ,*** आदि मासिक, त्रैमासिक एवं वार्षिक पत्रिकाएँ क्रमशः माधवी सरदेसाय, दिलीप बोरकार, फ्रेडी डिकास्टा, हेमा नायक, गोकुलदास प्रभु, तुकाराम शेट, और प्रताप नायक आदि के संपादकत्व में प्रकाशित होती हैं जिनमें प्रमुख रूप से कोंकणी साहित्य एवं यहाँ के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आदि विषयों को केंद्र में रखकर कविता, कहानी एवं अन्य समसामयिक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। कहानी, निबंध, समीक्षा आदि की दृष्टि से डॉ. माधवी सरदेसाय के संपादकत्व में ***जाग*** का दिवाली अंक विशेष रूप से पठनीय होता है। कोंकणी भाषा मंडल की स्थापना 1962 में मडगाँव में हुई। विगत 46 वर्षों से यह संस्था कोंकणी भाषा और साहित्य के विकास में निरंतर योगदान कर रही है। यहाँ से ***कोंकणी*** नामक पत्रिका प्रकाशित होती है। संप्रति युवा कोंकणी रचनाकार, सक्रिय कार्यकर्ता श्री पूर्णानंद चारी पत्रिका के संपादक और श्री मार्कोस गोन्साल्विस उपसंपादक हैं। मंगलूर से कन्नड लिपि में ***अमर कोंकणी*** नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन होता है। यहाँ अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व होने के कारण बहुत सी अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाएँ निकलती हैं जिनमें गोवा की तस्वीर को देखा जा सकता है।

पुरस्कार

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने कोंकणी को 1975 में स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की थी। उस समय से 2004 तक 29 विभिन्न विधाओं के कोंकणी रचनाकारों को साहित्य अकादमी के पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। इस वर्ष साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने कोंकणी के वयोवृद्ध साहित्यकार, चिंतक, मनीषी श्री रवींद्र केळेकर को 6 अक्तूबर 2007 को दीनानाथ मंगेशकर कला अकादमी, पणजी गोवा में साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया। यह कोंकणी भाषा और साहित्य के लिए गौरव की बात

है। वर्ष 2007 का साहित्य अकादमी का पुरस्कार श्री देवीदास कदम को ***दिका*** (दिशा) कोंकणी उपन्यास के लिए तथा अनुवाद का पुरस्कार श्रीमती शीला कोलंबकार को डोगरी कथा संग्रह की कोंकणी में अनूदित ***भांगराचे सुकर्णे*** पुस्तक के लिए दिया गया। कला अकादमी, गोवा ने 16 दिसंबर 2007 को प्रमुख अतिथि प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार डॉ. प्रो. नरेंद्र जाधव, कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ की उपस्थिति में श्रीमती सुधा आमोणकार, श्री सुरेश भंडारी उर्फ वैशाख, श्री जॅस फेर्नांदीश, श्री अनिल परुलेकर को क्रमशः ***आनंदतरंग*** (निबंध संग्रह), ***वैशाख वणवा*** (कविता संग्रह), ***किरवंट*** (कविता संग्रह), ***वनराईचा लढा*** (कादंबरी) पुस्तकों के लिए साहित्य पुरस्कार प्रदान किए गए।

कोंकणी भाषा मंडल, मडगाँव कोंकणी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने तथा उसके प्रचार–प्रसार में जिन–जिन लोगों ने नींव की ईंट की भांति कार्य किया है, उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार प्रदान करता है। इस वर्ष झितो आल्मेदा को ***गोंय म्हज्या समनांतलें पायणें*** (स्वर्गीय रॉक बार्रेट), जयमाला दयाणत को ***आंबड्या भोंवती तीन शेंवती,*** (स्वर्गीय नरसिंह दामोदर नायक), रवींद्र म्हाड्डोलकार को ***कविता सुर्याच्यो*** (स्वर्गीय शिवराय थोरत), शकुंतला भरणे को ***नादब्रह्म*** (स्वर्गीय शिवराय थोरत), एवं माया खरंगटे को ***मलब झेप*** (स्वर्गीय नरसिंह दामोदर) के लिए क्रमशः पुस्तकों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कोंकणी भाषा के विकास के लिए अनवरत कार्य करने वाले सदानंद सेनू प्रभू तेंडूलकार एवं सोतेर बार्रेटो को सेवा पुरस्कार से तथा जॉन मेंडोन्सा (बबन) को शिक्षक पुरस्कार से मंडल ने सम्मानित किया। पत्रकारिता का पुरस्कार ब्र. युसिबियो विन्सेंट मिरांड को दिया गया। गोवा कोंकणी अकादमी, पणजी, कोंकणी भाषा मंडल, मंडगाँव तथा राजीव कला मंदिर, फोंडा ने संयुक्त रूप से आठवें युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन का आयोजन 10–11 फरवरी 2007 को युवांगण, राजीव गाँधी कला मंदिर, फोंडा में किया। इस सम्मेलन में कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर विभिन्न सत्रों में आलेख पठन के साथ विचार व्यक्त किए गए। इस अवसर पर कोंकणी कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

अन्य गतिविधियाँ

हिंदी की शैक्षणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 1984 से गोवा में हिंदी प्रचार–प्रसार की दिशा में सक्रिय कार्य कर रही है। विगत चार वर्षों से संस्था हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर दो–दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन करती आ रही है। संस्था ने 29–30 सितंबर 2007 को ***आठवें दशक का भारतीय साहित्य***, विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। इसमें एक सत्र कोंकणी पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता कोंकणी अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. तानाजी हलकर्णकर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में कोंकणी साहित्यकार डॉ. हरिश्चंद्र नागवेकर को आमंत्रित किया गया था। युवा कोंकणी रचनाकार श्री राजय पवार एवं श्री हनुमंत चोपणकर ने क्रमशः आठवें दशक की कोंकणी कविता और उपन्यास पर आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. नागवेकर ने आठवें दशक के कोंकणी साहित्य पर एक समीक्षात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन में गोवा कोंकणी अकादमी विशेष रूप से कार्य कर रही है। युवा एवं अन्य रचनाकारों की सर्जन प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी उनकी कृतियों के प्रकाशन हेतु अनुदान एवं स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध कार्य हेतु कोंकणी शिक्षा पुरस्कार प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त अकादमी कोंकणी की विभिन्न विधाओं पर संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, काव्यगोष्ठियों, नाट्य प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन पूरे वर्ष भर करती रहती है।

कोंकणी अकादमी तथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से 30 जुलाई को कला अकादमी के ब्लैक बॉक्स में ***लेखक भेंट*** कार्यक्रम का आयोजन किया। इसके अंतर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत कोंकणी कवि श्री रमेश भ. वेलुस्कार से उनके 'जीवन और साहित्य 'विषय पर बातचीत की गई। इस अवसर पर कोंकणी कथाकार श्री दामोदर मावजो एवं साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सचिव श्री प्रकाश बी. उपस्थित थे। 4 अगस्त को अकादमी के अनुदान से प्रकाशित श्रीमती आरती संजगिरी की ***योगायोग*** पुस्तक का लोकार्पण कोंकणी कथाकार श्री महाबलेश्वर सैल के

1650 CHD/09—4A

द्वारा किया गया। इस अवसर पर कोंकणी लोक कथाकार डॉ. जयंती नायक विशिष्ट अतिथि एवं कोंकणी अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. तानाजी हळर्णकर उपस्थित थे।

कोंकणी अकादमी ने 20 अगस्त 2007 को 'कोंकणी राष्ट्रमान्यता' दिवस के अवसर पर ***बदलते हुए संदर्भ में बालसाहित्य की दिशा और उनकी अपेक्षा*** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। श्री रमेश वेलुस्कार, श्री मुकेश थळी, श्री मार्टीन मि. फेर्नांडीस और श्री प्रकाश पर्येकार ने अपने–अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर माया खरंगटे, सतीश दलवी, गजानन जोग, देवीदास कदम, और रमेश वुलुस्कार द्वारा क्रमशः लिखित ***रानांच्या मनांत, हरिश पिरिश आनी देवचार, वर्स फुकट वचूंक ना, काणी आज्याली*** और ***कुंडेकुस्कूर*** बालसाहित्य की पुस्तकों का विमोचन किया गया। डॉ. सु.म. तडकोडकार की ***एक कृष्णकळी*** और ***पांयजेल*** दो काव्य पुस्तकों का लोकार्पण 24 अगस्त को मुख्य अतिथि भूतपूर्व पंचायत मंत्री श्री सुभाष शिरोडकार के द्वारा किया गया। कोंकणी अकादमी, तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली एवं राजभाषा निदेशालय, गोवा सरकार ने संयुक्त रूप से ***कोंकणी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली*** विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें डॉ. तानाजी हल्र्णकर, प्रो. रोहिताश्व शर्मा, डॉ. किरण बुडकुले आदि कोंकणी एवं हिंदी के साहित्यकारों ने भाग लिया। कोंकणी अकादमी, राजस्थान साहित्य अकादमी, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से 8–9 अक्तूबर 2007 को ***कोंकणी और हिंदी लोकगीत*** विषय पर राष्ट्रीय परिसंवाद एवं बहुभाषी कवि–सम्मेलन का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो. दिलीप देवबागकर, कुलपति, गोवा विश्वविद्यालय ने किया। प्रस्तुत संगोष्ठी में राजस्थानी साहित्यकारों तथा स्थानीय हिंदी और कोंकणी के विद्वान और विदुषियों ने भाग लिया। गोवा कोंकणी अकादमी एवं केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में 13–10–07 को ***भाषा भारती 2004–2005 पुरस्कार*** का आयोजन किया गया। श्री पुंडलीक ना. नायक, अध्यक्ष, कोंकणी अकादमी की अध्यक्षता में श्री रवींद्र केळेकर को गुजराती से कोंकणी अनूदित ***दिसा सपन*** पुस्तक के लिए 'भाषा भारती' सम्मान से

1650 CHD/09—4B

सम्मानित किया गया। 29–10–07 से 02–11–2007 तक अकादमी ने पुनः ***कोंकणी तकनीकी शब्दावली*** की कार्यशाला का आयोजन किया।

गोवा कोंकणी अकादमी और गोवा लेखक समूह ने 07 नवंबर 2007 को अनुवाद के माध्यम से ***भाषा और साहित्य का विकास*** विषय पर चर्चा का आयोजन किया। इसमें कोंकणी के जानेमाने साहित्यकारों, समीक्षकों ने भाग लिया। अकादमी ने नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया और आई. एम. बी. के सहयोग से 14 और 21 नवंबर 07 तक ***राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह*** का आयोजन किया। जैसा कि मैंने पहले ही संकेत किया है कि कोंकणी भाषा और साहित्य का वास्तविक विकास गोवा मुक्ति के बाद हुआ। यहाँ की स्थानीय कोंकणी संस्थाएँ और गोवा सरकार, कोंकणी भाषा और साहित्य की प्रगति हेतु विविध प्रकार के कार्यक्रमों, अनुदानों, पुरस्कारों आदि का आयोजन कर रही है। जाहिर है कि उसे अपनी मंजिल तय करने में अभी थोड़ा और वक्त लगेगा, फिर भी वह प्रगति की दिशा में अविरल आगे बढ़ रही है।

***